श्रीविद्यामन्त्रमहायोग

[illegible]

श्रीविद्या साधना पीठ

[illegible]

षाण्मासिकी

ISSN 2277-5854

UPNUL/2013/51445

श्रीविद्यामन्त्रमहायोग

आगमतन्त्र की शोधपत्रिका

चितिः स्वतन्त्रा विश्वसिद्धिहेतुः

श्रीविद्या साधना पीठ

वाराणसी -उ.प्र.

वर्ष - १०

अङ्क - २

UPNUL/2013/51445 अभिनिर्देशित एवं सन्दर्भित ISSN 2277-5854

श्रीविद्यामन्त्रमहायोग

(आगमतन्त्र की शोधपत्रिका)

(षाण्मासिकी)

संस्थापक सम्पादक
श्री दत्तात्रेयानन्दनाथ जी
(सीताराम कविराज)

सम्पादकीय परामर्श मण्डल
प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी
सम्मानित आचार्य, संस्कृतविद्या धर्मविज्ञान संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रो. श्रीकिशोर मिश्र
संस्कृत विभाग, कला संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

सम्पादक
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
पूर्व-अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

श्रीविद्यासाधनापीठ

वाराणसी (उ.प्र.)

वर्ष 10 अङ्क 2

श्रीविद्या साधना पीठ शिवसदन गणेश बाग, नगवा, वाराणसी के लिये प्रकाशानन्दनाथ द्वारा श्रीविद्या साधना पीठ, शिवसदन, गणेश बाग, नगवा, वाराणसी से प्रकाशित एवं स्टार लाईन भवन संख्या बी 13/90 सोनारपुरा, वाराणसी से मुद्रित।

फरवरी, **2021**

सम्पादक :
डॉ. राजेन्द्रप्रसाद शर्मा

प्राप्तिस्थान
प्रकाशन विभाग
श्रीविद्यासाधनापीठ
शिवसदन, गणेशबाग, नगवाँ, वाराणसी
दूरभाष : 0542-2366622

UPNUL/2013/51445
ISSN. 2277-5854
UGC Approved Journal (No. 40949)
UGC CARE-listed in Religious Studies

सङ्गणकटङ्कित :
विशाल कम्प्यूटर्स, जयपुर

मुद्रक :
स्टार लाईन
सोनारपुरा, वाराणसी।

मूल्य : 125/-

नोट : इस अंक में प्रकाशित समस्त लेखों के सम्बन्ध में सभी विवाद वाराणसी न्यायालय के अधीन होंगे।

विषय-सूची

	सम्पादकीय	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा	

शोधलेख

1.	गर्भकाल में ईश्वर-जीव सम्बन्ध का वैज्ञानिक स्वरूप	आचार्य गुलाब कोठारी	1-4
2.	श्रीविद्या के संदर्भ में श्रीसूक्त का विवेचन	डॉ. आदित्य आंगिरस	5-15
3.	भारतीय दार्शनिक भाष्यकारों की शोध-पद्धति का अनुशीलन	प्रो. सरोज कौशल	16-29
4.	आगमतन्त्रस्य सामान्यपरिचयः	प्रो. शीतलाप्रसादपाण्डेयः	30-37
5.	अभिनवगुप्त विरचित *श्रीपरात्रिंशिका* में अनुत्तरतत्त्व की दार्शनिक मीमांसा	डॉ. प्रदीप	38-47
6.	श्रीविद्यासाधक पं. सम्पूर्णदत्तमिश्र की सारस्वत साधना	प्रो. नीरज शर्मा	48-52
7.	आचार्य मधुकरशास्त्री कृत आगमिक स्तुति *श्रीमातृलहरी*	डॉ. स्मिता शर्मा	53-60

8.	बाला त्रिपुरा मन्त्र का पौराणिक सम्बन्ध	श्रुति एच.जानी	61-64
9.	देवीपुराणान्तर्गत शिवागमीय योग	योगेश प्रसाद पाण्डेय	65-70
10.	नेपालराष्ट्रे शैवागमस्य प्रभावः	लेखनाथपौड्यालः	71-75
11.	श्रीविद्योपासक पं. श्रीहरिशास्त्री दाधीच एवं वाणीलहरी	डा. स्मिता शर्मा प्रो. नीरज शर्मा	76-84
12.	समकालीन दार्शनिक चिन्तन में मोक्ष की अवधारणा	प्रो. सुशिम दुबे	85-96
13.	मोक्ष प्राप्ति के नैतिक आदर्शों की उपदेशिका – *हंसगीता*	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा	97-102

ग्रन्थ समीक्षा

14.	शब्द यात्रा का विश्व कोषात्मक सन्दर्भ ग्रन्थ : अक्षर यात्रा	महामहोपाध्याय देवर्षि कलानाथ शास्त्री	103-104

श्रीविद्यासाधक पं. सम्पूर्णदत्तमिश्र की सारस्वत साधना

प्रो. नीरज शर्मा

राजस्थान प्रदेश-मत्स्याञ्चल के भरतपुर नगर में श्री सम्पूर्णदत्त मिश्र का जन्म सन् 1928 में हुआ। संस्कृत, अंग्रेजी साहित्य दोनों ही विषयों में स्नातकोत्तर उपाधिप्राप्त श्री मिश्र महोदय संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू, हिन्दी भाषाओं के साहित्य के विद्वान् थे तथा चारों ही भाषाओं में समानरूप से काव्यरचना करते रहे। स्वभाव से सौम्य, मनोहर, प्रसन्नचित्त, हिन्दी-संस्कृत कवि सम्मेलनों में लोकप्रिय श्री मिश्र ने राज्यसेवा में संस्कृत अध्यापन का कार्य करते हुए सन् 1983 में सेवानिवृत्ति प्राप्त की।

श्रीमिश्र 'साहित्य साधना वा परमेश्वरोपासना वा' इस सिद्धान्त की साक्षात् मूर्ति रहे हैं। अपने उत्कृष्ट काव्यसृजन के द्वारा श्री मिश्र ने कविपुण्डरीक की उपाधि प्राप्त की। संस्कृत के साथ अंग्रेजी भाषा साहित्य परिज्ञान के प्रभाव से श्री सम्पूर्णदत्त मिश्र की रचनाओं में पूर्व और पश्चिम जगत् के ज्ञान-विज्ञान, आध्यात्मिकता एवं भौतिकता, प्राचीनता एवं अर्वाचीनता का मणिकाञ्चनसहयोग प्रतिभासित होता है। आपकी प्रमुख काव्यरचनाओं में *ऋतूल्लास, सूक्ति पञ्चामृतम्* एवं *वृत्तिलहरी* हैं। स्तुतिपरक रचनाओं में *रासनायक और रासनायिकास्तव, श्रीरेवेश्वरराञ्जना* अथवा *सम्पूर्ण मुक्तिशतक, अष्टकाष्टक, राधाकृष्णकलानिधि, कालीधिकाराष्टक, सौभाग्यभावनपराष्टक, कामाक्षावरदस्तोत्र, गुणवतीस्तव, दुःस्वप्न निष्फलकराष्टक* हैं। राजस्थान प्रदेश के इस महनीय संस्कृत स्तोत्र साहित्य निम्नानुसार विवरण-समीक्षण प्रस्तुत किया किया जा सकता है—[1]

श्रीस्तवस्तबकम् (अष्टकाष्टकम्)

यह श्रीमिश्र के उन स्तोत्रों का संग्रह जिनमें भगवती का स्तवन विहित है। अष्टकाष्टकम् में 8 स्तुतियाँ है- 1. कालीधिकाराष्टकम् 2. गुणवतीस्तव 3. सौभाग्यभावनपरास्तव 4. दुःस्वप्नार्तिहरस्तव 5. धवलाचल-दुर्गास्तव 6. धवलपर्वतसुन्दरीस्तव 7. कामाक्षावरदस्तव 8. सुन्दरीसंगमस्तव है। यह संकलन सम्प्रति पूर्णतः अनुपलब्ध है तथा अप्रकाशित भी। 'कामाक्षावरदस्तोत्र' ही उपलब्ध हो सका है। यह स्तोत्र कवि के अनुसार आशुविवाहकारक है जिसके पाठ से कई अविवाहित वर कन्याओं के विवाह हो गये है

वरविवाहकामाय स्त्रीपुँल्लोकाय निर्मितम्।
सर्वकामहितं नित्यं कामाक्षावरदाष्टकम्॥

यह सदाशिव की शक्तिस्वरूपणी कामाक्षा देवी के आराधन में रचित है। इसके दो पद्य प्रस्तुत है—

कामाक्षिके वरदगेहिनि योगदक्षे
दुर्भाग्यलेखलघुलुम्पनलम्पटा त्वम्।

धर्मार्थकामजसुखाय समुत्सुकोऽहं
सौभाग्यभावनपरे शरणं त्वमेव॥
विवाहोत्को लोकः सपदि वरपत्नीसुखमलं
पतीयन्ती नारी पतिसुखमवाप्नोति तरसा।
ततो दुर्भाग्याङ्कप्रकटपरिणामापि जगती
सकामा कामाक्षे वरदरमणि त्वां प्रणमति॥[2]

श्रीललितामङ्गलसङ्गीतम्

यह प्रकीर्ण स्तुति रचना है जो किसी पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। श्री मिश्रजी द्वारा इसकी छाया प्रति उपलब्ध कराई गई। गणपति, बटुकभैरवादि संवलित श्री त्रिपुरसुन्दरी जगदम्बा ललिता के चरणारविन्दों का वन्दन करने वाले इस स्तव का एक पद्य प्रस्तुत है—

इन्द्राणीन्द्रमुकुटमणिदीपितकल्पलताकुसुमाञ्जलि शलिते।
रतिपतिहासविलासविकासितकवितागीतकलाञ्जलफलिते॥
गणपतिबटुकभैरवीवलिते।
वन्दे पदकमले ते ललिते॥

श्रीरासनायिकास्तव

इस स्तोत्र का प्रकाशन स्वयं कवि द्वारा 'रासनायकनायिकम्' ग्रन्थ में हुआ है। इसमें श्रीकृष्ण की आह्लादिनी शक्ति, नित्यनिकुञ्जेश्वरी श्रीराधा के उज्ज्वल गुणों का आराधन किया गया है। अपने कृपाकटाक्ष से समस्त क्लेशों को दूर कर देने वाली श्रीराधिका की महिमा वर्णन का एक पद्य प्रस्तुत है—

यदा गिरीशधामिनी शरद्विकासगामिनी
निशाधिनाथभामिनीव गन्धितास्ति यामिनी।
इतस्ततः परिभ्रमन्मदालसाशतेन किं
रसाधिपस्यराधिके! तदा त्वमेव कामिनी॥[3]

श्री राधाकृपाकटाक्ष

इस स्तोत्र में मुनिगणों द्वारा वन्दित सर्वलोक शोकहारिणी राधिका का स्तवन है। कवि ब्रजराजकुमारकृष्ण की हृदयेश्वरी निकुञ्जवासिनी वृषभानुकुमारी से उनके कृपाकटाक्षों की याचना करता है। भगवती की सौन्दर्य माधुरी का वन्दन करते हुये कवि कहता है कि श्रीराधिकाजी की भुजायें मृणाल वल्लरी के समान, बालारुण पल्लवों के समान चरणतल, अनङ्गधनुष के समान भृकुटि, स्वर्णकलशों के समान कुचद्वय है। आपकी इसी विश्वमोहिनी छवि के लिये श्यामसुन्दर सदैव लालायित रहते हैं। रससिन्धु श्रीकृष्ण के वामाङ्ग में नित्यविराजित श्रीराधाजी के स्वभावसुन्दर कृपा कटाक्ष प्राप्त होने पर भक्तों के रोम-रोम में भक्तिरस के अनिर्वचनीय आनन्द की रसधारा प्रवाहित होने लगती है। इसी प्रकार के भावभरे दो पद्य प्रस्तुत हैं—

अनन्तकोटिविष्णुलोकनम्रपद्मजार्चिते!
हिमाद्रिजा पुलोमजा विरञ्चिजा वरप्रदे!
अपारसिद्धिवृद्धिदिग्धसत्पदाङ्गुली नखे!
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्॥
मखेश्वरि! क्रियेश्वरी! स्वधेश्वरि! स्वरेश्वरि!
त्रिदेवभारतीश्वरि! प्रमाणशासनेश्वरि!
रमेश्वरि! क्षमेश्वरि! प्रमोदकाननेश्वरि!
व्रजेश्वरि! व्रजाधिपेशि! राधिके! नमोऽस्तु ते॥[4]

रेवेश्वररञ्जना

इस स्तोत्रकाव्य के अन्य अभिधान रञ्जनानाथरञ्जना और सम्पूर्णमुक्तिशतक भी है। यह रचना महाशिवरात्रि सन् 1998 ई. में लेखक द्वारा प्रकाशित है जिसकी भूमिका का लेखन प्रसिद्ध विद्वान् पं.. बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते ने किया है। काव्य में कुल 111 पद्य है। बसन्ततिलका छन्द में प्रतिपद उच्चरित भावों का क्रम एवं आरोह अवरोह सहृदयों भक्तों के हृदय में आनन्द उत्पन्न करने वाला है। कवि ने अन्त:करण में उल्लसित भावतरङ्ग को विचार स्वातन्त्र्य के पक्षधर होते हुये भी शास्त्रीय मर्यादों से बाहर नहीं जाने दिया है। प्राथमिक दो पद्यों में स्तोता भगवान की महिमा को जानता हुआ भी परिहासगर्भस्तोत्र के ब्याज से निवेदन करता है कि विश्व की एकमात्र सौन्दर्यवती पार्वती के प्रणयी होते हुये भी आपकी रतिनर्मदा (रेवा) के जघन स्थल में क्यों है, अथवा दिगम्बर वनवासी होते हुये भी नर्मदा का आश्रय लिये हुये हैं ! तदनन्तर कुछ पद्यों में शिव सुन्दरी के उपासना वैशिष्ट्य का प्रतिपादन किया गया है। बीच बीच में सांसारिक विषयों चरित्रों पर भी कवित्वपूर्ण आक्षेप किये गये है—आत्मविमर्श की धाराओं में विविध वृतान्तों का आलोचन किया गया है। भक्तिमार्ग में आज कुछ विपरीत चरित्र वाले भी प्रविष्ट हो गये है तो उनका चरित्र विश्वसनीय कैसे हो सकता है। क्या श्री विद्या भवानी की उन पर भी कृपा होती है, यह प्रश्न कवि उठाता है। पद्य 35 से कवि द्वारा जन्मान्तरीय सम्बन्ध, माया द्वारा व्यतिक्रम, सांसारिक दु:खोपलब्धि तथा बन्धन को काटने वाले मोक्ष की कामना आदि का वर्णन है, किन्तु मोक्ष तो उससे भी परतर विशेष विश्रान्तिरूप है। इस स्तोत्र में लौकिक-अलौकिक पदार्थ विचार, प्रमाण विचार एवं मोक्ष के वास्तविक स्वरूप का वर्णन किया गया है। इसी में श्रीविद्या भगवती के स्वरूप का तन्त्रोक्त वर्णन किया गया है। नित्यमुक्त परमपुरुष शिव तथा शक्ति के आचरण का गुणगान करते हुये त्रिविध तापों से मुक्ति, निवृति के विषय में शास्त्रसम्मत और स्वतन्त्र विचारों का संग्रह इस स्तोत्र का प्रमुख प्रतिपाद्य है। कतिपय पद्य द्रष्टव्य है—

सम्मोहनं जघनयोर्ननु नर्मदाया:
श्रीसुन्दरीश्वर! तवापि समुत्थितं किम्!
यत्पार्वतीप्रणयपाणिगतोऽपि लग्नो
लिङ्गात्मकेन वपुषा किल तत्कलाङ्के ॥

गन्धर्वयज्ञरमणी परिरम्भणीयो
यत्र प्रवाति पवन: शनकैर्वसन्ते
तन्नर्मदा पुलिनपादपपुञ्जमध्ये
मन्दारमन्दिरगतं शिवमानतोऽस्मि॥
सौभाग्यतो यदि भवत्कृपया शिवेऽहं
प्राप्तास्मि शान्ति सुखवज्जननान्तराणि।
अस्यां जनौ सह मयाऽति विपत्सहानां
सङ्गं भविष्य सुखि जन्मसु चापि याचे॥
त्वत्पादपङ्कजतले वसतोऽपि यन्मे
चेतस्युदग्र उदित: प्रसभं विषाद:।
तल्लक्षणं वरद! मे प्रभुताऽऽपदाया-
स्त्वञ्चैव तन्निरसने तरसा समर्थ:॥[5]

श्री रासनायक स्तव

इस स्तोत्र का प्रकाशन स्वयं मिश्र जी ने किया है, जिसके पूर्व में डॉ. राधाकृष्णन, बटुकनाथ खिस्ते आदि अनेक विभूतियों के शुभाशंसन संलग्न है। इस स्तोत्र में रासलीला के नायक श्री नन्दकिशोर की स्तुति अभ्यर्थना है। रास जीवात्मा तथा परमात्मा के मिलन, अद्वैत का प्रतीक है। भक्तो के उर की व्यथा तथा समस्तपापों को नष्ट करने वाले गोपियों के अभिवादक वेणुधर यमुनातट पर विचरने वाले गोपाङ्गनाओं के साथ लास्य करने वाले करुणा वरुणालय ब्रजराज नन्दकिशोर के स्तवन के दो पद्य प्रस्तुत है—

नमामि भाग्यवायकं प्रपन्नसौख्यधामकं
मयूरपिच्छमौलिमुग्धमाणवाधिनायकम्।
परप्रवीणगायकं परास्तपञ्चसायकं
व्रजाटवीनिशीथलब्धषोडशीसहायकम्॥
प्रसिद्धसद्गुणावली विभूति सन्निधायकं
कुसङ्गसूतपापभूतपूतनाऽसुपायकम्।
समुद्रिकाद्यसुन्दरीसुरूपदर्पदायकं
जने कृपा विधायकं प्रणौमि रासनायकम्॥[6]

श्री कृष्णकृपाकटाक्ष

श्री कृष्णकृपा कटाक्ष 'स्तुतिरासनायकनायिकास्तव' ग्रन्थ में संगृहीत तथा प्रकाशित है। कामदेव का गर्व चूर करने वाले, गोपजनों का संकट हरने वाले गिरिवरधारी, इन्द्र का मानमर्दन करने वाले मन्दहास से युक्त, कमल नयन

श्रीकृष्ण की रूपमाधुरी की इस स्तोत्र में मनोरम अभिवन्दना वर्णित है। इस स्तुतिकाव्य की हृदयग्राहिता दर्शनीय है—

सदैवपादपङ्कजं मदीयमानसे निजं
दधानमुत्तमालकं नमामि नन्दबालकम्।
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणं
समस्तगोपमानसं नमामि नन्दलालसम्॥
समस्तगोपमोहनं हृदम्बुजैकमोदनं
नमामि कुञ्जमध्यगं प्रसन्नभानुशोभनम्।
निकामकामदायकं दृगन्तचारुसायकं
रसालवेणुगायकं नमामि कुञ्जनायकम्॥[7]

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि पं.. सम्पूर्णदत्त मिश्र का यह स्तोत्रसाहित्य अपने आराध्य के गुणगान, आत्मदैत्य प्रकाशन के साथ-साथ अत्यन्त मनोहारी, काव्यात्मक सौन्दर्य से सर्वथा परिपूर्ण है। यह साहित्य अपनी सरस अनुपम पदशरूया तथा पदमाधुरी, स्वाभाविक अलंकारयोजना, सफल तथा रसानुकूल गुणाभिव्यञ्जकता, आदि धर्मों से युक्त है। यह आस्वादन तथा अनुभूति के स्तर पर पूर्ण सक्षम तथा भक्तिरसपरिपूर्ण साहित्य है।

सन्दर्भ

---

1. *बीसवीं शती का राजस्थानीय संस्कृत स्तोत्र साहित्य*; डा. नीरज शर्मा,राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केंद्र, जयपुर, 2011
2. *'कामाक्षावरदस्तव'* की छायाप्रति श्री सम्पूर्णदत्त मिश्र द्वारा लेखक को प्रदान की गई।
3. *रासनायिकास्तव* पद्य, 5
4. *राधाकृपाकटाक्ष* पद्य, 11, 12
5. *रेवेश्वर रञ्जना*, सम्पूर्णदत्त मिश्र पद्य, 1, 3, 59, 98
6. *रासनायक नायिका स्तव पद्य* 7, 8
7. *श्री कृष्णकृपाकटाक्ष* पद्य, 4,7

अध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर-313001
चलवाणी- 9414292699
आवास- सी-6 दुर्गानर्सरी रोड,
उदयपुर-1